IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मारवाड़ के सामंत "राजवी"

मंजू वर्मा
सह आचार्य इतिहास
श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय
सीकर –332001

सारांश : मारवाड़ के असंख्य सामंतों में राजा के छोटे भाई व राजा के परिवार के सदस्यों को जागीरे दी जाती थी, वे "राजवी" कहलाते थे। तीन पीढ़ी तक वे रेख, चाकरी, हुक्मनामा आदि करो से मुक्त रहते थे। "राजवी" महाराजा के प्रति सेवाओं के लिए तत्पर रहते थे। तीन पीढ़ी के बाद "राजवी" भी सामान्य जागीरदारों की श्रेणी में आ जाते थे।

मारवाड़ के असंख्य सामंतों को मुख्यतः चार श्रेणियों मे विभाजित किया जा सकता है –

1.राजवी

2.सरदार

3.मुत्सद्दी

4.गनायत

राजवी –

राजा के छोटे भाई व राजा के परिवार के सदस्यों जिन्हें उदर पूर्ति के लिए जागीरे दी जाती थी, वे "राजवी" कहलाते थे। उन्हें तीन पीढ़ियों तक रेख, चाकरी, हुक्मनामा आदि शुल्कों की रकम राज्य के खजाने में जमा नहीं करवानी पड़ती थी। अर्थात तीन पीढ़ी तक वे रेख, चाकरी, हुक्मनामा आदि करो से मुक्त रहते थे और तीन पीढ़ी के बाद यह "राजवी" भी सामान्य जागीरदारों की श्रेणी में आ जाते थे। "राजवी" महाराजा के प्रति सेवाओं या चाकरी[1] के लिए तत्पर रहते थे, लेकिन मौलिक अनुदानदत्ता के 3 पीढ़ियों के बाद से पद धारण कर्ता को रेख देनी होती थी। साथ ही प्रत्यर्पण शुल्क या हुक्मनामा भी अदा करना होता था और साधारण जागीरदार की तरह सैनिक सेवा देनी होती थी।

सन्दर्भ –

1. (क) आर.एस.ए. हकीकत बही न.42, पृ. 153

(ख) आर.एस.ए. आमद, बही न. 24

(आर.पी.व्यास – रोल ऑफ़ नोबिलिटी इन मारवाड़ दृ पुस्तक से उद्धत)